नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 19.01.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी. जी. कॉलेज जंगल धूसड़ गोरखपुर में **भारत–भारती पखवारा** के अन्तर्गत **हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप पुण्यतिथि** कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन सचिव और प्रतिष्ठित इतिहासविद् **डॉ0 बालमुकुन्द पाण्डेय** ने कहा कि **महाराणा प्रताप यश शौर्य और राष्ट्र स्वाभिमान के दैदीव्यमान नक्षत्र हैं।** उनका सम्पूर्ण जीवन इतिहास उस अक्षयवट के समान है जो युवाओ को निरंतर प्रेरित करता रहेगा। भारतीय चेतना एवं अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जीवन भर वन–वन भटकने का मार्ग महाराणा प्रातप ने वैसे ही चुना जैसे श्रीराम ने राष्ट्र रक्षा में अताताथियों का बध करने के लिए चौदह वर्ष का वनवास चुना था। लेकिन साम्राज्यवादी एवं साम्यवादी मानसिकता के कारण भारतीय इतिहास में उन्हे वह स्थान नही मिला जो मिलना चाहिए। महाराणा प्रताप के जीवन की गौरव गाथा को जानबुझकर नजर अन्दाज एवं विकृत कर दिया गया। महाराणा प्रताप भारतीय संस्कृति के प्रतीक है, राष्ट्रीय स्वाभिमान पर मर–मिटने वालो के प्रतिमान हैं। उन्होंने आगे कहा कि महाराणा प्रताप उस परम्परा के वाहक है जिस परम्परा में यह प्रतिष्ठित है कि जीवन मूल्य की स्वाधीन चेतना देकर की जाती है। मध्यकालीन भारत में महाराणा प्रताप स्वाधीन चेतना के वैसे ही नायक है जैसे बीसवीं शताब्दी में भगत सिंह, आजाद, बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी थें। महाराणा प्रताप हमारे ऐसे वास्तविक नायक है जिनका जीवन शौर्य, सम्प्रभुता, स्वतन्त्रता, जातीय स्वाभिमान का प्रतिमान था। महाराणा प्रताप का नाम भारत के शिखर के अमर–सपूतों में दर्ज है। प्रताप भारत एवं भारतीयता के प्रतीक हैं। राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा के लिए प्रताप ने एक दिन भी चैन से नहीं जिया।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र के असिस्टेण्ट प्रोफेसर **डॉ. अमित कुमार उपाध्याय** ने कहा कि महाराणा प्रताप और उनका जीवन भारत की पहचान है। राष्ट्र–समाज के लिए त्याग–बलिदान के पर्याय है महाराणा प्रताप। भारतीय युवाओं में भारत की सुरक्षा और संरक्षा का संकल्प पैदा करने का माद्दा रखता है महाराणा प्रताप का जीवन दर्शन। स्वाभिमान, स्वावलम्बन, स्वधर्म के लिए सर्वस्व समर्पण का नाम है महाराणा प्रताप। भारत के नवजवानों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण से लेकर महाराणा प्रताप और शिवाजी के जीवन चरित्र को शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्थान देने की महति जरूरत है। जब भी राष्ट्र पर संकट होगा राष्ट्र खतरें में होगा, स्वधर्म एवं देश का स्वाभिमान खतरे में होगा उस समय महाराणा प्रताप का त्याग बलिदान अमरज्योति का कार्य करेगी। विशेष रूप से अंग्रेजी इतिहासकारों ने भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीकों, स्मृतियों एवं महापुरुषो के महत्व को कम करने के लिए अनेक प्रकार के भ्रम फैलाये। महाराणा प्रताप की वीरता के बारे में भी इतिहासकारों ने विविध प्रकार के भ्रम पैदा करने वाले मिथ्या

प्रचार इतिहास के पन्नों में अत्याधिक प्रचार करने में सफल रहे और दुर्भाग्य से वर्षो तक उन्ही विकृत इतिहासों को पढ़ते–पढ़ाते रहे। आज के समय की महती आवश्यकता है कि इतिहास का पुनर्लेखन किया जाये ताकि भारत के महापुरुषो की गौरव गाथा भारत के घर–घर तक पहुँच सके।

कार्यक्रम में प्रस्ताविकी एवं स्वागत करते हुए **डॉ0 प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि भारत–भारती पखवारा में स्वामी विवेकानन्द से लेकर महाराणा प्रताप, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और गणतन्त्र दिवस तक की यात्रा पूरी करने वाला यह आयोजन भारत और भारतीयता को युवाओं के जीवन में लाने का प्रेरणास्पद प्रयत्न है ताकि यहाँ पढ़ने वाले छात्र–छात्रा अपने निजी जीवन के साथ–साथ देश और समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी का जिम्मेदारी के साथ दायित्व–निर्वहन कर सकें। आज भारत के नवयुवकों के सामने महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक का जीवन पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रस्तुत न करने के कारण युवाओं में राष्ट्रभक्ति, स्वधर्म के प्रति आग्रह, देश समाज के लिए समर्पण के भाव का अभाव हुआ है। आज जिस तरह से देश वाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, जिस तरह से आज नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद और आतंकवाद जैसे बड़े संकट से देश गुजर रहा है, उसका एक बड़ा कारण यही है कि हम युवकों को राष्ट्रीय प्रेम और राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित शिक्षा देने में लगातार असफल हो रहे हैं। हमें प्रसन्नता है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरक्षपीठ न महराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक के नाम पर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर युवकों में राष्ट्रीयता का भाव पैदा कर रहा है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्ण कुमार पाठक ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्जवलन, सरस्वती वन्दना एवं राष्ट्रगान के साथ तथा समापन वन्देमातरम् के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ0 आर0 एन0 सिंह, डॉ0 शिव कुमार बर्नवाल, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ0 प्रज्ञेश कुमार मिश्र, डॉ0 सुभाष कुमार गुप्ता, डॉ0 सौरभ सिंह, श्री नन्दन शर्मा, सुश्री दीप्ति गुप्ता, श्री सुबोध कुमार मिश्र सहित स्वयं सेवक एवं स्वयं सेविकाएं उपस्थित रहें।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी